ANUBHAVS

मेरे साथी

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com

– राजीव पांडे

परमपूज्य बापूजी के पास आने के बाद ‘बापू हमेशा अपने भक्तों के साथ रहते हैं’ यह अनुभूति अनेक बार हुई तथापि एक अनुभव लिखे बगैर रहा नहीं जाता।

मैं एक सॉफ्टवेअर इंजिनिअर हूँ और नौकरी के कारण सौदी अरेबिया के ‘जेद्दा’ शहर में रहता हूँ। यह शहर मुस्लीम धर्मियों के तीर्थक्षेत्र मक्का से मात्र ७० कि.मी. की दूरी पर है। नौकरी करनेवाले अन्य देशवासी अनिवासियों को सौदी सरकार ‘इकामा’ नामक वर्क परमिट देती है। यह अपने यहां के राशन कार्ड के आकार का होता है। यह अत्यंत मूल्यवान माना जाता है। इसे हर एक को चौबीसो घंटे अपने पास रखना पड़ता है। रोजमर्रा के जिंदगी में कभी भी इसकी जांच की जा सकती है और इसके पास न होने की स्थिती में दंड या जेल हो सकती है। दूसरी महत्वपूर्ण चीज मोबाईल है। इसके चोरी होने पर इसमें डाली गई जानकारी के आधार पर आंतकवादी अथवा गुंडे आपको बेवजह किसी साजिश का शिकार बना सकते हैं।

हम तीन भारतीयों (एक हैद्राबाद से, एक बंगलूर से और मैं मुंबई से) को बाग इंडस्ट्रियल सिटी में प्रोजेक्ट साईट पर जाना पड़ता था। हम सौदी में नए थे और हमारे पास वाहन भी नहीं था, इसलिए प्रोजेक्ट साईट के पास ‘महजर’ नामक डिस्ट्रीक्ट में रहते थे। हमारे यहां जैसे अलग अलग नगर होते हैं, वैसे सौदी में डिस्ट्रीक्टस् होते हैं। महजर में ३/४ भाग में अत्यंत क्रूर और हिंसक वृत्ति के लोग रहते हैं।

मक्का यह मुसलमानों का एकमात्र तीर्थस्थल है, यहाँ समूचे विश्व से कई लोग हज या उमरा इस यात्रा के लिए १५ दिन के व्हिजा पर आते हैं। १५ दिन की अवधि समाप्त होने पर ये लोग अपने देश वापस न लौटते हुए जेद्दा के महजर में टूटे फूटे मकानों में या झोपडियों में रहते हैं और रास्ते पर गाडियों को साफ करने या राहगिरों को लूटकर अपनी उपजीविका चलाते हैं। ये लोग अनिवासी या दूसरे देश के लोगों को पहचानने में माहिर होते हैं। दिनदहाडे इन लोगों पर हमला कर, चाकू की नोंक पर लूटते हैं। लूट में प्रमुखतः नकद रकम, इकामा, मोबाइल, सोने की चेन, अंगूठी आदि का समावेश होता है। इकामा चोरी होने पर उसे पुनः बनवाने में लगभग २५ हजार रूपयों का खर्च होता है। साथ ही कंपनी और संबंधित दफ्तर मे जटिल कागजी कार्यवाही करनी पडती है। ये गुंडे, लुटेरे इकामा तथा मोबाइल लूटने की बाद

उसे लौटाने के लिए भारी रकम की मांग करते हैं। इस बातचीत का स्वरूप ब्लैकमेलिंग की भाँती ही होता है और वह अलग अलग ठिकानों पर की जाती है। सौदी पुलिस कभी भी 'महजर' के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करती और किया तो उन्हीं के साथ मारपीट होती है। अतः कभी यदि हस्तक्षेप करना ही पडा तो वे सौदी आर्मी की मदद लेते हैं। इतनी इन गुंडों की दहशत है। तो यह थी घटना की पार्श्वभूमी, और ऐसे क्षेत्र में हम निवास कर रहे थे। लूट और हमले की अनेक घटनाये अनिवासी लोगों द्वारा सुनी थी और हम बहुत ही सावधान रहते थे। लेकिन वक्त कभी एक समान नहीं होता।

एक शनिवार को मैंने ऑफिस से ही सीधे बाहर खाना खाने जाने का निश्चय किया। शाम के लगभग साढे सात बजे मैं रेस्टॉरंट से बाहर निकला। हाथ में थैली, कमर पर लगे पाऊच में मोबाइल, शर्ट की जेब में कुछ पैसे और नीचे की जेब में बटुआ तथा इकामा रखा था। रेस्टॉरेंट के पास के रास्ते पर लगभग २०-२५ मीटर के इलाके में एकदम अंधेरा था और बाद में दुकानें थी। इस अंधेरे इलाके में सौदी का डाकघर था और फूटपाथ पर अंधेरा था। रास्ते पर वाहन ज्यादातर तेजगति से दौड़ते रहते हैं, अतः पैदल चलने हेतू फुटपाथ पर चलने के अलाव और कोई चारा नहीं था। इस अंधेरे का फायदा उठाकर हुई लूटमार की घटनाओं का वर्णन सुना था। उस शाम मुख्य सडक पर काफी वाहनों की आवाजाही थी और मैं उसी अंधेरे फुटपाथ पर चल पडा और मन में विचार भी आया कि सौदी डाकघर की हरी नियॉन साईन बोर्ड और इतने भीड-भाडवाले रास्ते पर लूटमार कैसे संभव होती है ?सहजता से बाये हाथ से गले में पहने हुए 'त्रिपुरारी त्रिविक्रम चिह्न' के लॉकेट को हाथ में लिया और तभी बायी ओर से कमर पर लगाये हुए मोबाइल पर जोरदार वार हुआ। मुँह से तुरंत 'हरामखोर' यह गाली निकली। देखा तो क्या ! घात लगाकर बाईक पर बैठा एक काला, घुँघराले बालवाला, ऊंचा आदमी अचानक मेरे सामने आ गया। वैसे अनेक बार मामूली झटके से खुलकर गिरनेवाला मोबाइल पाऊच, इस तेज वार के बाद भी अपनी जगह पर बना हुआ था। पता नहीं कैसे ? यह लीला बापूजी के अलावा कौन कर सकता हैं ? उसी समय मेरा बाया हाथ 'त्रिपुरारी त्रिविक्रम लॉकेट' पर था, उस चोर को क्या पता था कि उसने एक बापूभक्त से पंगा लिया है।

मैंने मेरा बाये हाथ से बेल्ट पर लगाया हुआ मोबाइल निकाला और थैली में डाल दिया। यह दृश्य देख रहा एक मलयाली दुकानदार जोर से चिल्लाया, ''भागोऽऽ वो पीछे आएगा।'' मैंने तुरंत ही हमेशा की राह न पकडते हुए, दुसरी गली पकडी और जोर से भागने लगा। भागते भागते पीछे देखा तो वह गुंडा कुछ दूरी पर खोदे हुए रास्ते पर गिरने ही वाला था और कुछ लोग उसे पीछे भाग रहे थे।

घर आते ही मैंने बापूजी की उपासना के फोटो के सामने अगरबत्ती लगाई एवं मनोमन बापूजी के प्रति आभार व्यक्त किये उसी समय मेरी आंखे भर आई। उस हमलावर का अनपेक्षित वार इतना जबरदस्त था कि मोबाइल तो जाता ही, साथ ही शरीर का एकाद अवयव क्षतिग्रस्त हो जाता, मैं वहीं गिर जाता और इकामा, पैसे सभी से हाथ धोना पडता। लेकिन मेरे बापू मेरे साथ है तो ऐसा हो ही कैसे सकता है ? 'स्मृगामी बापूराया। हमारी कितनी चिंता करते हो ?

अनसूयोऽत्रिसंभूतो दत्तात्रेयो दिगंबरः।

स्मर्तृगामी स्वभक्तानां उद्धर्ता भवसंकटात् ॥

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com